वर्षम् - ०४ अङ्कः – ०४ शोधज्योतिः
जनवरी – दिसम्बर, 2022 ISSN-2350-0700

संस्कृत साहित्य में वृक्षों और पौधों का महत्व

डॉ. चन्द्रकान्त पण्डा[१]

सारांश :

संस्कृत में विरचित वेद, पुराण, गीता आदि सभी ग्रंथों में वृक्षों के औषधीय, धार्मिक, पर्यावरण, व्यापारिक, सामाजिक आदि सभी गुणों का महत्व विस्तार से वर्णित किया गया है। सदियों से ही ऋषिमुनियों ने वृक्षों में देवत्व एवं दिव्यत्व का एहसास किया है। वृक्षों में विराट विश्व एवं प्रकृति की विराटता का कोमल एहसास है। प्रत्येक पेड़, पौधा, वनस्पति और वृक्ष में प्रकृति की एक अनुपम शक्ति और रहस्य छुपा हुआ है, जिसका आख्यान वेदों, उपनिषदों, पुराणों, शास्त्रों, लोक विश्वासों व परम्पराओं में अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होता है। इन वृक्षों के शुभ परिणामों को लेकर काफी अध्ययन भी किये गये, कौन से वृक्ष हमारे लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी हैं? कौन से वृक्ष केवल सौन्दर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ? कौन से वृक्ष हवन की दृष्टि से पवित्र हैं? इन सभी सत्यों एवं तथ्यों की जानकारी हमारे वैदिक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। भारतीय संस्कृति में वृक्ष मानव के लिए स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रमुख घटक के रूप में माने जाते हैं। आयुर्वेद में इनकी विशेषता का उल्लेख मिलता है और इन वृक्षों और पौधों के गुण-धर्म के आधार पर इनका औषधि रूप में एवं पर्यावरण के लिए उपयोग किया जाता है। वनस्पतियों का यही गुण-धर्म एवं उनका सदुपयोगिता उन्हें देवत्व का स्थान प्रदान करती है। वृक्षों को देवता के समान मानकर उनकी उपासना, अभ्यर्थना की परम्पराएँ हमारी धरोहर रहीं है।

प्रस्तावना :

हमारे शरीर को निरोगी बनाये रखने में औषधीय पौधों का अत्यधिक महत्व होता है, यही वजह है कि भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रामाणिक ग्रंथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। इससे प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियों से बनाई गई दवाइयों से न केवल मानव जीवन की रक्षा होती हैं बल्की चिकित्सकों द्वारा रोगोपचार हेतु अमल में लाया जाता हैं। जंगलों में खुद उगने वाले अधिकांश सेजै गील ने अर्चना तक की जा धीय पौधों के अद्भुत गुणों के कारण लोगों द्वारा इसकी पूजाषऔ पीपल, तुलसी, बेल, बरगद तथा नीम इत्यादि। प्रसिध्द विद्वान् चरक ने चरक संहिता

[१] (सहाचार्य), वराबाजार बिक्रम टुडु मेमोरियाल कालेज, वराबाजार, पुरुलिया-723127, पश्चिमबङ्ग ईमेल-ckpanda0203@gmail.comमोबाइल-9679437600

में तो हरेक प्रकार के औषधीय पौधों का विश्लेषण करके बीमारियों में उपचार हेतु कई अनमोल किताबों की रचना तक कर डाली है जिसका प्रयोग आजकल मानव का कल्याण करने के लिए किया जा रहा है । आयुर्वेद में कुछ औषधीय पौधे और जड़ी बूटियां शामिल है जो कई स्वास्थ्य समस्याओं का प्रभावी ढंग से इलाज या उपचार कर सकते हैं और हमारे समग्र स्वास्थ्य के लिए अच्छे साबित हो सकते हैं। लंबे समय से भारतीय परंपरा का हिस्सा रहे हैं और प्राचीन काल से विभिन्न औषधीय प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों जैसे हल्दी, अदरक, तुलसी के पत्ते, पुदीना और दालचीनी आमतौर पर भारतीय व्यंजनों में उपयोग किए जाते हैं और वे कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं। इनके प्रयोग से फ्लू, शीतज्वर, सर्दी, तनाव से राहत, बेहतर पाचन, मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली पाने के अलावा और भी बहुत से फायदों की एक लंबी सूची है। कुछ ऐसे औषधीय पौधे हैं, जो हम अपने घर में लगा सकते हैं और यह कई रोगों से मुक्ति दिला सकते हैं।

शोध विषय का उद्देश्य-

संसार मे वृक्षों और पौधों का क्या महत्व है, यह शोध विषय का प्रमुख उद्देश्य है क्योंकि मानव को अपनी माता की गोद के बाद प्रकृति की गोद ही भाती है। सदियों से भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के आश्रय में रहकर वेद उपनिषद आरण्यक, ब्राह्मण, भाष्य, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थ रचे हैं।प्रकृति को ही अपने अनुसंधान की प्रयोगशाला बनाया। उस समय वनस्पति को काटते समय यह सोचा जाता था कि उसमें अनेक स्थानों पर फिर से अंकुर फूटें-

अयं हि त्वा स्वधितिस्ते तिजानः प्राणिनाय महते सौभगाय।
अतस्त्वं देववनस्पते शलवल्शो वि रोह सहस्त्रवल्शाविवयं रुहेम।
यजुर्वेद संहिता-5.43।

मानव जीविका से जोड़ते हुए शतपथ ब्राह्मण - 133.10 में उल्लेख है कि पृथ्वी पर जहां पौधे बहुत होते हैं वहां जीविका भी बहुत है। यथा यत्र वाऽअस्यै बहुलतमा-, औषधयस्तदस्या उपजीवनीयतम्।

ऋषि-मुनियों का वृक्षादि वनस्पतियों से अपार प्रेम रहा है। रामायण और महाभारत में वृक्षों-वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के समान प्रदर्शित है, महाकवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति शकुन्तला की सहचरी सी दिखती हैं एवं ऋतुसंहार और मेघदूत में प्रकृति एक महत्वपूर्ण चरित्र के रूप में वर्णित होती हैं, वहीं मनुस्मृति आदि धर्मग्रन्थों में स्वार्थ के लिए हरे-भरे पेड़ों को काटना पाप घोषित किया गया है। अनावश्यक रूप से काटे गये वृक्षों के लिए दण्ड का विधान है। मत्स्यपुराण में वृक्ष महिमा का वर्णन करते हुए दस पुत्रों के समान एक वृक्ष को महत्व दिया गया है।

संस्कृत साहित्य में वृक्षों और पौधों का महत्व :

चारों वेदों में वृक्षों को पृथ्वी की संतति कहकर इन्हें अत्यधिक महत्व एवं सम्मान प्रदान किया गया है सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद की एक ऋचा में कहा गया है – भूर्जज्ञ उत्तान पदो .... (ऋग्वेद 10/72/4) अर्थात् हमारी पृथ्वी वृक्ष से उत्पन्न हुई है। यह भी माना गया है कि ब्रह्मा ने जल में बीज बोया और वनस्पति उपजी, ये मान्यताएं सृष्टि में वृक्षों के प्रथम आगमन की सूचनाएं ही नहीं देती, बल्कि इन्हें आदिशक्ति से भी जोड़ती हैं। पृथ्वी सूक्त में लिखा है कि वन तथा वृक्ष वर्षा लाते हैं, मिट्टी को बहाने से बचाते हैं साथ ही बाढ़ तथा सूखे को रोकते हैं तथा दूषित गैसों को स्वयं पी जाते हैं। यही कारण है कि पुरातन काल में वृक्षों का देवता के समान पूजन किया जाता था। हमारे ऋषि-मुनि एवं पुरखे इसलिये कोई भी कार्य करने से पूर्व प्रकृति को पूजना नहीं भूलते थे –

अश्वत्थो वटवृक्षश्चन्दनतरुर्मन्दारकल्पौ द्रुमौ।
जम्बू-निम्ब-कदम्ब आम्रसरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः।।

गीता में श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं कि- "अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वाधाहमहमौषधम् (9/16) अर्थात् मैं ही औषधि हूँ तथा वृक्षों में अश्वत्थ पीपल हूँ - (अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां 10/26)।

बृहदारण्यक उपनिषद् (3/9/28) में वृक्ष का दृष्टांत देकर पुरुष का वर्णन किया गया है क्योंकि पुरुष का स्वरूप वृक्ष के समान है। दोनों में पर्याप्त समानताएं हैं।

आयुर्वेदाचार्यों की दृष्टि में देखें तो विश्व में ऐसी कोई वनस्पति नहीं, जो औषधि के गुणों से युक्त न हो। यहाँ पर वृक्षों को देवतुल्य मानकर इन्हें व्यर्थ रूप से काटने पर नैतिक प्रतिबन्ध लगाया गया है। इसलिए श्वेताश्वतरोपनिषद् में वृक्षों को साक्षात् ब्रह्म के सदृश बताया गया है - "वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः।" पद्म पुराण में भगवान विष्णु को अश्व रूप, वट को रुद्र रूप और पलाश को ब्रह्म रूप बताया गया है -

अश्वत्थरूपी भगवान् विष्णुरेव न संशयः।
रुद्ररूपी वटस्तदूत पलाशो ब्रह्मरूपधृक्।

भविष्य पुराण में ही बताया गया है कि वटवृक्ष मोक्षप्रद, आम्रवृक्ष अभीष्ट कामनाप्रद, सुपारी का वृक्ष सिद्धप्रद, जामुन वृक्ष धनप्रद, बकुल पाप-नाशक, तिनिश बल-बुद्धिप्रद तथा कदम्ब वृक्ष से विपुल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। आंवले का वृक्ष लगाने से अनेक यज्ञों के सदृश पुण्यफल प्राप्त होता है। गूलर के पेड़ में गुरुदत्त भगवान का वास माना गया है। पारिजात के वृक्ष के बारे में तो यह बताया गया है कि भगवान श्रीकृष्ण इसे स्वर्ग से लाए थे। शास्त्रों में बताया गया है कि वृक्षों को काटने वाला गूंगा और अनेक व्याधियों से युक्त होता है। अश्वत्थ (पीपल, वटवृक्ष और श्रीवृक्ष) का छेदन करने वालों को ब्रह्म हत्या का पाप लगता है। महाभारत एवं रामायण में वृक्षों के प्रति मनोरम कल्पना की गई है। महाभारत के भीष्म पर्व में वृक्ष को सभी मनोरथों को पूरा करने वाला कहा गया है -सर्वकामफलाः वृक्षाः। महाभारत

में वृक्षों को देवताओं के समान माना गया है और इसका पूजन सामग्री के रूप में भी प्रयोग की जाती है। महाभारत के एक पर्व में कहा गया है कि पर्ण और फलों से समन्वित कोई भी सुन्दर वृक्ष इतना सजीव एवं जीवंत हो उठता है कि वह पूजनीय हो जाता है -

एको वृक्षो हि यो ग्रामे भवेत् पर्णफलान्वितः।
चैत्यो भवति निर्ज्ञातिरर्चनीयः सुपूजितः।। (आदिपर्व 151/33)

धार्मिक मान्यता है कि जिस घर में तुलसी की नित्य पूजा होती है, वहाँ पर यमदूत कभी नहीं पधारते हैं -

तुलसी यस्य भवने नित्यं हि परिपूज्यते।
तद्गृहं नोपसर्पन्ति कदाचित् यमकिङ्कराः।।

वराह पुराण में उल्लेख किया गया है कि जो पीपल, नीम या बरगद का एक, अनार या नारंगी के दो, आम के पाँच एवं लताओं के दस वृक्ष लगाता है वह कभी भी नारकीय पीड़ा को नहीं भोगता है और न ही नरक-यात्रा करता है।

अश्वत्थमेकं पिचुमन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दशपुष्पजातीः।
द्वे द्वे तथा द्याममातुलङ्गे पञ्चाम्ररोपी नरकं न याति।।

समुद्र मंथन से वृक्ष जाति के प्रतिनिधि के रूप में कल्पवृक्ष का उद्भव होना एवं देवताओं द्वारा उसे अपने संरक्षण में लेना वृक्षों की महत्ता को अवगत कराते हैं! शास्त्रीय दृष्टि से देखें तो तीर्थ स्थानों में वृक्षों को देवताओं का निवास स्थान माना है। वट, पीपल, आँवला, बेल, कदली, पद्म वृक्ष तथा परिजात को देव वृक्ष माना गया है। भारतीय संस्कृति से धार्मिक कृत्यों में वृक्ष पूजा का अत्यधिक महत्व है। पीपल (अश्वत्थ) को शुचिद्रुम, विप्र, यांत्रिक, मंगल्य, सस्थ आदि नामों से जाना जाता है। पीपल को पूज्य मानकर उसे अटल प्रारब्ध जन्य कर्मों से निवृत्ति कारक माना गया है। पीपल को अखण्ड सुहाग से भी सम्बन्धित किया गया है। लोक परम्परा के अनुसार संतान की इच्छुक स्त्रियाँ उसकी पूजा अभ्यर्थना करती हैं। मान्यता है कि पीपल की परिक्रमा करने से जन्म-जन्मांतरों के पाप-ताप मिट जाते हैं। चित्त निर्मल होता है। अश्वत्थ की महिमा वेदों-पुराणों में जगह-जगह देखने को मिलती है। तुलसी को वायु शोधन एवं पवित्रता के लिए हर आँगन में लगाने की प्रथा है क्योंकि तुलसी को सर्वाधिक आक्सीजन प्रदायक पौधा माना जाता है। इसका पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसके पास हानिकारक जीवाणु-विषाणु या कीड़े-मकोड़े नहीं पनपते। यह घातक कृमि और कीटों को नष्ट करती है। भोजन में तुलसी का भोग पवित्र माना गया है, जो कई रोगों की रामबाण औषधि है। भारतीय संस्कृति में बिल्व वृक्ष को भगवान शंकर से जोड़ा गया है। इसकी पत्तियों को शिवलिंग पर चढ़ाने का विधान है। परन्तु वामन पुराण में बिल्व पत्र को लक्ष्मी से उद्भव मानते हैं। इसमें लक्ष्मी का वास भी माना जाता है। इसे अथर्ववेद में

महान् उपकारी वृक्ष कहा गया है। जैसे-'वै भद्रो बिल्वो महान् भद्र उदुम्बरः।' अर्थात् औषधीय गुणों से युक्त होने के कारण इसकी तुलना उपकारी पुरूष से की गई है। वामन पुराण में कदम्ब का जन्म कामदेव के माध्यम से किया गया है। कदम को भगवान विष्णु, लक्ष्मी एवं यशोदा नंदन कृष्ण से भी जोड़ा गया है - ढाक, पलाश, दूर्वा एवं कुश जैसी वनस्पतियों को नवग्रह पूजा आदि धार्मिक कृत्यों में प्रयुक्त किया जाता है। इसके साथ ही अशोक, चम्पा अरिष्ट, पुन्ताग, प्रियंगू, शिरीश, उदूम्बर तथा पारिजात को शुभ माना गया है। इनमें देवताओं का निवास स्थान अथवा देवत्व शक्ति मानी गयी है। इन वृक्षों के सानिध्य से मनुष्य में तेज, ओज तथा वार्यवान होने की सम्भावना सुनिश्चित है। वाराह-मिहिर, कश्यप संहिता तथा विश्वकर्मा-प्रकाश आदि बहुमूल्य ग्रन्थों में लिखा है बाग लगाना हो तो सर्वप्रथम इन प्रमुख वृक्षों को लगाना चाहिए -

"अशोकचम्पकारिष्टपुन्नागाश्च प्रियङ्गवः।
शिरीषोदुम्बराः श्रेष्ठाः पारिजातकमेव च।।
एवे वृक्षाः शुभा ज्ञेयाः प्रथमं तांश्च रोपयेत्।।"

इसी तरह से भगवान विष्णु को बाल रूप में वटपत्रशायी कहा गया है। स्त्रियाँ वट सावित्री की पूजा ज्येष्ठ अमावस्या को करती है। वे अपने पति के दीर्घायुष्य एवं मंगल कामना के लिए व्रत रखकर वट वृक्ष की परिक्रमा करती हैं। नीम की पूजा का भी प्रचलन है। नीम के पेड़ का प्रेत बाधा के लिए उपयोग किया जाता है। कुछ आदिवासी एवं अन्य जातियाँ इसमें देवी का वास तथा नाग पूजा के रूप में पूजती हैं। साथ ही उक्त सभी वनस्पतियां हमारे जलवायु और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखकर वर्षा, नदी, पहाड़ और समुद्र का संरक्षण भी करती हैं। भारत में स्थानीय विश्वासों के आधार पर कई ऐसे वृक्ष हैं जिसमें देवताओं का निवास होता है। कल्पवृक्ष के संबंध में ऐसी धारणा है कि वह हमारी सभी तरह की मनोकामना की पूर्ति कर देता है। कुछ ऐसे भी वृक्ष हैं जिनको घर में लगाने से सुख और समृद्धि आती है। मंत्र में विश्वास रखने वाले लोग अक्सर ऐसे वृक्षों की खोज में लगे रहते हैं जिसकी छाल या अन्य किसी हिस्से से वशीकरण का इत्र, गायब होने की बुटिका या आज्ञाचक्र को खोलकर त्रिकालज्ञ बनने की औषधि बनाना चाहते हैं। संस्कृत साहित्य में वृक्षों के महत्व के संबंध में एक श्लोक पठनीय है-

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते।।

अर्थात् विशाल वृक्ष की सेवा करनी चाहिए। क्योंकि वह फल और छाया से युक्त होता है। यदि किसी दुर्भाग्य से फल नहीं देता तो उसकी छाया कोई नहीं रोक सकता है। पंचतन्त्र में कहा गया है-

वृक्षान् छित्त्वा पशून् हत्त्वा कृत्वा रुदिरकर्दमम्।
यद्येवं गम्यते स्वर्गे नरकः केन गम्यते।।

अर्थात् वृक्षों को काटने के वाद जानवरों का नरसंहार करने के वाद, एक खूनी हिंसा करने से अगर इस तरह से स्वर्ग प्राप्त होता है तो नरक किसके द्वारा प्राप्त किया जाता है।

पीपल का महत्व :

संस्कृत साहित्य में पीपल का बहुत महत्व है। पीपल के वृक्ष को संस्कृत में प्लक्ष भी कहा गया है। वैदिक काल में इसे अश्वत्थ इसलिए कहते थे, क्योंकि इसकी छाया में घोड़ों को बाँधा जाता था। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में पीपल के औषधीय गुणों का अनेक असाध्य रोगों में उपयोग वर्णित है। औषधीय गुणों के कारण पीपल के वृक्ष को 'कल्पवृक्ष' की संज्ञा दी गई है। पीपल के वृक्ष में जड़ से लेकर पत्तियों तक तैंतीस कोटि देवताओं का वास होता है और इसलिए पीपल का वृक्ष प्रातः पूजनीय माना गया है। उक्त वृक्ष में जल अर्पण करने से रोग और शोक मिट जाते हैं। पीपल के प्रत्येक तत्त्व जैसे छाल, पत्ते, फल, बीज, दूध, जटा एवं कोपल तथा लाख सभी प्रकार की आधि-व्याधियों के निदान में काम आते हैं। हिंदू धार्मिक ग्रंथों में पीपल को अमृततुल्य माना गया है। सर्वाधिक ऑक्सीजन निस्सृत करने के कारण इसे प्राणवायु का भंडार कहा जाता है। सबसे अधिक ऑक्सीजन का सृजन और विषैली गैसों को आत्मसात करने की इसमें अकूत क्षमता है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं, 'हे पार्थ ! वृक्षों में मैं पीपल हूँ। पुराण में कहा गया है-

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नमः।।

अर्थात् इसके मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा अग्रभाग में शिव का वास होता है। इसी कारण 'अश्वत्थ'नामधारी वृक्ष को नमन किया जाता है। श्रीमद्भागवत में वर्णित है कि द्वापरयुग में परमधाम जाने से पूर्व योगेश्वर श्रीकृष्ण इस दिव्य पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान में लीन हुए। इसके नीचे विश्राम या ध्यान करने से सभी तरह के मानसिक संताप मिट जाते हैं तथा मन स्थिर हो जाता है। स्थिर चित्त ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या कोई महान कार्य कर सकता है। वृक्ष हमारे मन को स्थिर और शांत रखने की ताकत रखते हैं। चित्त की स्थिरता से साक्षित्व या हमारे भीतर का द्रष्टापन गहराता है। हमारे ऋषि-मुनि, बुद्ध पुरुष, अरिहंत, भगवान आदि सभी पीपल के नीचे बैठकर ही ध्यान करते थे। उक्त वृक्ष के नीचे ही बैठकर बुद्ध और महावीर स्वामी ने तपस्या की तथा वे ज्ञान को उपलब्ध हो गए। पूर्ण द्रष्टा हो गए। स्कन्द पुराण में वर्णित है की पीपल के वृक्ष में सभी देवताओं का वास है। पीपल की छाया में ऑक्सीजन से भरपूर आरोग्यवर्धक वातावरण निर्मित होता है। इस वातावरण से वात, पित्त और कफ

का शमन-नियमन होता है तथा तीनों स्थितियों का संतुलन भी बना रहता है। इससे मानसिक शांति भी हो पीपल की पूजा का प्रचलन प्राचीन काल से ही रहा है। इसके कई पुरातात्विक प्रमाण भी है। अश्वत्थोपनयन व्रत के संदर्भ में महर्षि शौनक कहते हैं कि मंगल मुहूर्त में पीपल वृक्ष की नित्य तीन बार परिक्रमा करने और जल चढ़ाने पर दरिद्रता, दु:ख और दुर्भाग्य का विनाश होता है। पीपल के दर्शन-पूजन से दीर्घायु तथा समृद्धि प्राप्त होती है। अश्वत्थ व्रत अनुष्ठान से कन्या अखण्ड सौभाग्य पाती है। याज्ञवल्क्य स्मृति में वृक्ष के काटने को अपराध माना गया है और इसके लिए दंड का विधान बनाया गया। इसके पीछे चाहे जो कारण एवं कर्मकाण्ड रहे हों परन्तु इतना तो सुनिश्चित है कि वेदों एवं पुराणों के सृजनकर्ता प्राच्य ऋषि इस तथ्य को बारीकी से समझते थे। अतः उन्होंने मनुष्य की परा प्रकृति एवं अपरा प्रकृति के सूक्ष्म एवं स्थूल सम्बन्धों पर व्यापक चिंतन करके प्रकृति के विकास क्रम को पूर्ण करके इसके स्तरों पर आरोहरण करने का निर्देश दिया है। प्राच्य ऋषियों का उद्देश्य बाह्य प्रकृति से अंतः प्रकृति में प्रवेश कर तथा उसे पार कर आनंद पाना था।

वटवृक्ष का महत्व :

बरगद को वटवृक्ष कहा जाता है। हिंदू धर्म में सावत्री नामक एक त्योहार पूरी तरह से वट को ही समर्पित है। हिंदू धर्मानुसार चार वटवृक्षों का महत्व अधिक है। अक्षयवट, पंचवट, वंशीवट, गयावट और सिद्धवट के बारे में कहा जाता है कि इनकी प्राचीनता के बारे में कोई नहीं जानता। संसार में उक्त चार वटों को पवित्र वट की श्रेणी में रखा गया है। प्रयाग में अक्षयवट, नासिक में पंचवट, वृंदावन में वंशीवट, गया में गयावट और उज्जैन में पवित्र सिद्धवट है। कई सगुण साधकों, ऋषियों, यहाँ तक कि देवताओं ने भी वट वृक्ष में भगवान विष्णु की उपस्थिति के दर्शन किए हैं। वट वृक्ष भीषण गर्मी में राहत प्रदान करता है तथा इसकी टहनियों के द्वारा पृथ्वी की श्वसन क्रिया उचित ढंग से संचालित होती है। इसकी रस्सी जैसी टहनियाँ चर्मरोग, आँख रोग, मधुमेह के लिये उपयोगी होती हैं। वेदों एवं उपनिषदों में वटवृक्षों से वन और उपवन तक की यात्रा एक अत्यन्त ही रोचक विषय है। जो स्वास्थ्य-सम्बर्द्धन में औषधीय प्रयोग करने की महत्वपूर्ण विधियों के रूप में प्रयोग की जाती है।

तुलसी का महत्वः

आयुर्वेद के मतानुसार तुलसी हृदय के लिए हितकारी, गर्मी दाह तथा पित्त नाशक और कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, रक्तविकार, पसली की पीड़ा, कफ तथा वात नाशक है। तुलसी का प्रयोग विभिन्न प्रकार के रोग ज्वर, मन्दाग्नि, उदर शूल, कप- खाँसी आदि को दूर करने में सहायक होती है। तुलसी का प्रतिदिन दर्शन करना पापनाशक समझा जाता है तथा पूजन करना मोक्षदायक। देवपूजा और श्राद्धकर्म में तुलसी आवश्यक है। तुलसी पत्र से पूजा करने से व्रत, यज्ञ, जप, होम, हवन करने का पुण्य प्राप्त होता है।

कहते हैं भगवान श्रीकृष्ण को तुलसी अत्यंत प्रिय है। भारत के अधिकांश घरों में तुलसी के पौधेकी पूजा की जाती है। हमारे ऋषियों को लाखों वर्ष पूर्व तुलसी के औषधीय गुणों का ज्ञान था इसलिए इसको दैनिक जीवन में प्रयोग हेतु इतनी प्रमुखत स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष :

जब से धरती पर वृक्षों का अस्तित्व रहा है तब से आज तक वृक्षों ने अपने धर्म का ईमानदारी से पालन किया है। ईश्वर ने उन्हें जो काम सौंपा था उसे वे बखूबी निभाते रहे हैं। वृक्ष ईश्वर के सच्चे उपासक हैं। सभी प्राणियों का जीवन संभालते हुए, प्रदूषण को रोकने और जलवायु एवं वातावरण के संतुलन को बनाए रखने का कार्य करते हुए भी वे सदा ईश्वर की प्रार्थना में लीन रहते नजर आते हैं। हिंदू धर्म में प्रकृति के सभी तत्वों की पूजा और प्रार्थना का प्रचलन और महत्व है, क्योंकि हिंदू धर्म मानता हैं कि प्रकृति ही ईश्वर की पहली प्रतिनिधि है। प्रकृति के सारे तत्व ईश्वर के होने की सूचना देते हैं। इसीलिए प्रकृति को देवता, भगवान और पितृ मातृ माना गया है। हिंदू धर्म का वृक्ष से गहरा नाता है। हिंदू धर्म को वृक्षों का धर्म कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि हिंदू धर्म में वृक्षों का जो महत्व है वह किसी अन्य धर्म में शायद ही मिले। इस ब्रह्मांड को उल्टे वृक्ष की संज्ञा दी है। पहले यह ब्रह्मांड बीज रूप में था और अब यह वृक्ष रूप में दिखाई देता है। प्रलय काल में यह पुन: बीज रूप में हो जाएगा। शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति एक पीपल, एक नीम, दस इमली, तीन कैथ, तीन बेल, तीन आँवला और पाँच आम के वृक्ष लगाता है, वह पुण्यात्मा होता है और कभी नरक के दर्शन नहीं करता। इसी तरह धर्मशास्त्रों में सभी तरह से वृक्ष सहित प्रकृति के सभी तत्वों के महत्व की विवेचना की गई है। इसलिए संस्कृत में कहा गया है–

च्छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषाः इव ॥

अर्थात् वृक्ष स्वयं धूप सहते हुए दूसरों को छाया देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. पापनाश: परासिद्धिः वृक्षारामप्रतिष्ठया' - 'अग्निपुराण'-७०-८।
2. दशकूप-समा वापी दशवापी-समो ह्रद:। दशह्रद-समो पुत्र: दशपुत्र-समो द्रुमः।'' -- 'मत्स्यपुराण,१६।
3. ऋग्वेद, १०-१०१-१०।
4. यजुर्वेद के क्रमश: १३-१८, १४-१२, १५-६४ तथा ६-२२ से।

''यन्तु नद्य: वर्षन्तु पर्जन्या: सुपिप्पला ओषधय: भवन्तु।
अन्नवतामोदनवतामामिक्षवताम्। एषां राजा भूयासम् ओदनमुद्बुवते परमेष्ठी वा एष: यदोदन: परमामेवैनं श्रियं गमयति ॥

5. प्राचीन भारत में पर्यावरण (एक ऐतहासिक अध्ययन गुप्तकाल से पूर्वमध्य युग), शोधप्रबंध, डॉ. मृदुला चौधरी, गयाघाट वाराणसी।
6. महाकवि कालिदास की शकुन्तला और पर्यावरण (आलेख), उर्मिला श्रीवास्तव), पृष्ठ-335
7. संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना के संदर्भ में आधुनिक कवि डॉ. राधेश्याम गंगवार के साहित्य का विवेचन, (आलेख), पिंकी तिवारी, 3 मार्च 2016, पृष्ठ- 86-88।
8. पर्यावरण और प्रदूषण, डॉ. अरुण रघुवंशी, पृष्ठ- 125।
9. ऋग्वेद,1/90/6-8,यजुर्वेद,13/27-29।
10. पर्यावरण प्रभूत्वम् संस्कृत साहित्य एवं पर्यावरण, पृष्ठ-335।
11. मनुस्मृति,4/56।
12. संस्कृत साहित्य और पर्यावरण सुधार(आलेख), डॉ. रामहेत गौतम, 17 मार्च 2014
13. संस्कृत साहित्य में पर्यावरण (आलेख), वीरराघव खण्डूडी, राजकीय स्नातक महाविद्यालय, उत्तरकाशी, 2017।
14. वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना, रेनूसिंह (आलेख), गोरखपुर, 2015।

~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~